छायावाद और जयशंकर प्रसाद की कविता

~ डॉ. अमरेन्द्र नाथ त्रिपाठी

(हिंदी विभाग, एसजीजीएस कॉलेज, पटना सिटी)

[कक्षा, स्नातक-**द्वितीयवर्ष(प्रतिष्ठा)**, में पहले पढ़ाये गए विषय को दुहराने(रिवीजन) के लिए इस लेख की प्रस्तुति की जा रही है।]

जयशंकर प्रसाद 1889 में बनारस में जन्मे थे। प्रसाद आधुनिक काल के छायावादी दौर के कवि के रूप में जाने जाते हैं। कई विद्वानों का मानना है कि प्रसाद छायावाद के उन्नायक कवि हैं या प्रतिनिधि कवि हैं। प्रसाद की अनेक रचनाएं छायावादी कविता के लक्षणों को दिखाती हैं। इसकी चर्चा हम इस लेख में देखेंगे।

छायावादी कविता के चार स्तम्भ माने गए हैं। ये चार स्तम्भ हैं - जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा और सुमित्रानंदन पंत। इन्हें ही छायावाद के चार बड़े रचनाकारों के रूप में देखा जाता है। इन सभी की कविताओं में छायावाद के कुछ मूल लक्षण दिखाई देते हैं। किसी में कम और किसी में अधिक। प्रसाद को छायावाद का प्रतिनिधि कवि इसलिए कहा जाता है कि इनके यहाँ छायावाद के अधिकांश लक्षण पाए जाते हैं।

ये छायावादी लक्षण हैं क्या? कैसे तय होता है कि यह कविता छायावादी है? इसके लिए जरूरी है कि 1918 से 1936 के बीच की जो हिंदी कविताएं इन चारों बड़े कवियों द्वारा लिखी गयी हैं, उनके ख़ास लक्षणों को देखा जाय। प्रसाद छायावाद के प्रतिनिधि कवि कहे जाते हैं, अतः उनकी कविताओं में इन लक्षणों को देखना दिलचस्प होगा।

छायावाद के लक्षणों पर बात करते हुए दो शब्दों की चर्चा की गयी है : प्रस्तुत और अप्रस्तुत। प्रस्तुत वह है जो दिखाई देता है। अप्रस्तुत वह है जो दिखाई नहीं देता। इसे परोक्ष भी कहते हैं। लेकिन यह भी गायब नहीं होता, एक दूसरी समझ या निगाह से देखने यह अप्रस्तुत या परोक्ष भी दिखाई देता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल का कहना है कि 'छायावाद का सामान्य अर्थ हुआ -- प्रस्तुत के स्थान पर उसकी व्यंजना करने वाली छाया के रूप में अप्रस्तुत का

© Dr. Amrendra N. Tripathi, SGGS College

कथन।' इसे देखते हुए कहा जा सकता है कि छायावाद की कविता में उस छाया या अप्रस्तुत को खोजना महत्वपूर्ण है।

जयशंकर प्रसाद की कविता में छाया या अप्रस्तुत मुख्य रूप से वेदना के रूप में सामने आती है। उनका कहना भी है कि 'जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी, तब हिंदी में उसे छायावाद के नाम से अभिहित किया गया।' 1930-31 के दौरान प्रसाद का 'आँसू' काव्य छायावादी कविता में 'वेदना के आधार' को दिखने के लिए अहम है।

'आँसू' में जो दिख रहा वह गहरी वेदना है। यह वेदना प्रसाद का वैयक्तिक (निजी) पक्ष भी हो सकता है। इसीलिये निजी अनुभूतियों को रखना भी छयावाद की खासियत मानी गयी है। इसे छायावादी व्यक्तिवाद भी कहा जाता है। 'आँसू' में यह व्यक्तिवादी अहसास कविता में वेदना का रूप लिए सबसे जुड़ने के लिए सामने आता है। प्रसाद कहते हैं :

इस करुणा कलित हृदय में
अब विकल रागिनी बजती
क्यों हाहाकार स्वरों में
वेदना असीम गरजती?

और, यह भी :

जो घनीभूत पीड़ा थी
मस्तक में स्मृति-सी छाई
दुर्दिन में आँसू बनकर
वह आज बरसने आई।

जो अहसास प्रसाद की कविताओं में या छायावादी कवियों के यहाँ दिखाई देता है वह पहले की कविताओं से कई माने में अलग है। पहले किसी बात या वस्तु पर कविता लिखी जाती थी तो वह बाहरी वर्णनों को ज्यादा पेश करती थी। वह स्थूल चित्रण कहा जाता है। छायावादी कवि सूक्ष्म चित्रण करता है। जैसे सुबह या शाम का चित्र जब पहले के कवि खींचते थे तो वे यह बताते थे कि आकाश का रंग कैसे हो रहा है या अँधेरा कैसे घट या बढ़ रहा है लेकिन छायावाद का कवि इस तरह के बाहरी या स्थूल चित्रण से अपनी बात ख़त्म नहीं करता। वह अपने प्रतीकों और शब्दों से कोई भीतरी या आतंरिक बात कहने की कोशिश करता है। जैसे

© Dr. Amrendra N. Tripathi, SGTB College

शाम का जिक्र करते हुए द्विवेदी युग के कवि हरिऔध कहते हैं : 'गगन था कुछ लोहित हो चला' अर्थात आकाश सांझ के समय लाल होने लगा है। वहीं छायावादी कवि निराला कहते हैं कि 'मेघमय आसमान से उतर रही है, वह संध्या सुंदरी परी सी' अर्थात सांझ पारी की तरह धीरे-धीरे आसमान से धरती पर आ रही है। जहाँ हरिऔध का चित्रण स्थूल है वहीं निराला का सूक्ष्म। इस तरह के चित्रण को देखते हुए आलोचकों ने 'छायावाद को स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह' कहा।

सूक्ष्म चित्रण की सुंदरता को या अप्रस्तुत के विधान को प्रसाद के काव्य में देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए प्रसाद की यह कविता 'बीती विभावरी जाग री' देखी जा सकती है। इसमें रात बीतने का और सुबह के होने का दृश्य है। कविता देखें :

बीती विभावरी जाग री

अम्बर पनघट में डुबो रही
तारा-घट ऊषा नागरी

खग-कुल कुल-कुल-सा बोल रहा
किसलय का अंचल डोल रहा
लो यह लतिका भी भर लाई-
मधु मुकुल नवल रस गागरी

अधरों में राग अमंद पिए
अलकों में मलयज बंद किए
तू अब तक सोई है आली
आँखों में भरे विहाग री

© Dr. Arrendra N. Tripathi, SGGS College

अगर कवि बाहरी या स्थूल चित्रण करके अपनी बात ख़त्म कर देता तो कविता में उतने अर्थ न आ पाते। यह कविता भोर का अधिक अहसास भरा चित्र प्रस्तुत करती है। इस अहसास में जागरण की कामना है। कवि सुबह का चित्रण भर नहीं कर रहा है, सोने वालों को जगा भी रहा है। तू अब तक सोई है आली, जबकि सब तो जग गए हैं। इस अहसास की पहुँच को आप पराधीन भारत से जोड़ कर देखिये। फिर यह सुबह का चित्रण ही नहीं, राष्ट्रीय जागरण की

कविता दिखेगी। यह जो जागरण का 'अप्रस्तत'(गायब नहीं) भाव है, वह इस कविता को ख़ास बना रहा है।

कविता में व्यक्त आतंरिक या निजी अनुभूति कई बार इस तरह से सामने आती है कि कवि जो बात कह रहा है उसमें कोई रहस्य है। यह रहस्य भी अप्रस्तुत ही रहता है। इसका संकेत भर कवि करता है। छायावाद के इस रहस्यवादी पक्ष की कई लोगों ने निंदा भी की है कि यह कविता को कमजोर करता है और पाठक के लिए कविता अबूझ बातें रखने लगती है। प्रसाद के यहाँ भी रहस्यवादी भावना के दर्शन होते हैं। यह कविता देखें:

मधुराका मुस्काती थी
पहले देखा जब तुमको
परिचित-से जाने कब के
तुम लगे उसी क्षण हमको।

इसे पढ़ते हुए लगता है कि मधुराका द्वारा कवि को मुस्करा कर परिचित-सा बूझना कुछ ऐसा रहस्य है जो उन्हीं दोनों के बीच का मामला है।

सौंदर्य चित्रण में प्रकृति का ही नहीं, नारी के सौंदर्य को भी नए तरह से देखने की बात छायावादी कविता में दिखाई देती है। इन कविताओं को पढ़ते हुए आप यह नहीं जान पाते कि अमुक स्त्री का नैन-नक्श कैसा है या शारीरिक सौंदर्य कैसा है। आतंरिक अहसास पर जोर देने वाली कविता ने व कवियों ने नारी के भीतरी सौंदर्य को रखने की कोशिश की। वह सौंदर्य जो कवि ने अलग तरह से देखा हो। प्रसाद की सौंदर्य को देखने की दृष्टि अलग है। वे सौंदर्य को व्यक्ति की चेतना से जोड़ कर देखते हैं। उनकी कविता की पंक्ति है : 'उज्ज्वल वरदान चेतना का / सौंदर्य जिसे सब कहते हैं।' प्रसाद का महाकाव्य 'कामायनी' सौंदर्य चित्रण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसमें मनु, श्रद्धा और इड़ा जैसे पात्रों का जो सैंदर्य चित्रण मिलता है, वह बाहरी नहीं बल्कि आतंरिकता या चेतना से ताल्लुक रखता है। नारी के श्रद्धामय सौंदर्य को प्रस्तुत करते हुए प्रसाद का कहना है :

नारी! तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास-रजत-नग पगतल में।
पीयूष-स्रोत-सी बहा करो
जीवन के सुंदर समतल में।

© Dr. Amrendra N. Tripathi, SGGS College

दरअसल प्रसाद या छायावादी कवियों के यहाँ सौंदर्य को रखने वाली जो नयी दृष्टि दिखी वह कल्पना की स्वच्छंदता से आयी। पहले का कवि इतनी स्वच्छंद कल्पनाएं नहीं कर पाता था। कल्पना इतनी स्वच्छंद कैसे हुई? इसके जवाब में आलोचकों ने उस समय के वैज्ञानिक प्रगति और वैचारिक विकास देखा है। उनका कहना है कि उस समय चारों ओर नए-नए अविष्कार हो रहे थे, नए प्रयोग हो रहे थे, दुनिया भर के लोग एक-दूसरे से जुड़ने लगे थे। कुलमिलाकर एक नयी दुनिया सामने दिखाई देने लगी थी। यह बात पहले नहीं थी। इसने कवि या लोगों के मन को टहलने के लिए एक बड़ा इलाका या नयी दुनिया खोल दी थी। कवि स्वच्छंद कल्पना के सहारे इस नयी दुनिया को देखने लगा था।

प्रसाद की कविता में राष्ट्रीय और सांस्कृतिक जागरण भी देखा जा सकता है। यह छायावाद की कविता को इस आरोप से बचाता है कि जब देश में स्वाधीनता आंदोलन चल रहा था तब ये कवि अपने अंतर्मन की तान छेड़ रहे थे। प्रसाद जैसे कवि मुखर होकर राष्ट्रीय और सांस्कृतिक जागृति को लाने के लिए कविताएं लिख रहे थे। यह भाव उनकी 'पेशोला की प्रतिध्वनि' जैसी अनेक कविताओं में मौजूद है। इस कविता में मेवाड़ पूरे भारत का रूपक हो जाता है। तत्कालीन पराधीनता में प्रतिध्वनि के बहाने कवि वही सवाल पूछता है कि राणा प्रताप सा कौन है जो राष्ट्रीय दायित्व को अपने सर पर लेगा :

आज भी पेशोला के-
तरल जल मंडलों में,
वही शब्द घूमता सा-
गूँजता विकल है .
किन्तु वह ध्वनि कहाँ ?
गौरव की काया पड़ी माया है प्रताप की
वही मेवाड़!
किन्तु आज प्रतिध्वनि कहाँ है?

कहना न होगा कि जयशंकर प्रसाद की कविता अपने विषय और शिल्प में बेजोड़ साबित होती है। वह छायावाद जैसे कविता के आंदोलन को ताकतवर बनती है। इसे देखते हुए कोई उन्हें छायावाद का उन्नायक या प्रतिनिधि कवि कहता है तो यह ठीक ही है।

© Dr. Amrendra N. Tripathi, SGGS College, Pataliputra University